बृजेन्द्र उत्कर्ष
कवि एवं लेखक

206, टाइप-2, आई. आई. टी., कानपुर, भारत
मो॰ 91-9956171230, फो॰ 0512-2598638
E-Mail: kaviutkarsh@gmail.com
Blog: www.kaviutkarsh.blogspot.com

नया सबेरा

****

नए साल का, नया सबेरा,
जब, अम्बर से धरती पर उतरे,
तब शान्ति,प्रेम की पंखुरियाँ,
धरती के कण-कण पर बिखरें,

चिडियों के कलरव गान के संग,
मानवता की शुरू कहानी हो,
फिर न किसी का लहू बहे,
न किसी आँख में पानी हो,

शबनम की सतरंगी बूँदें,
बरसे घर-घर द्वार,
मिटे गरीबी,भुखमरी,
नफरत की दीवार,

ठण्डी-ठण्डी पवन खोल दे,
समरसता के द्वार,
सत्य, अहिंसा और प्रेम,
सीखे सारा संसार,

सूरज की ऊर्जामय किरणें,
अन्तरमन का तम हर ले,
नई सोंच के नव प्रभात से,
घर घर मंगल दीप जलें//

हो हर घडी नववर्ष की, उत्कर्ष और उल्लास की ,
सप्त रंगों से सजी हो हर कहानी आपकी /
स्वप्न पूरे हो सभी, दामन भी हो खुशियों भरा,
शांति-सुख-समृद्धिमय हो, जिंदगानी आपकी //

क्या लिखूं

****

मै भी कवि बनना चाहूँ,
मगर लिखूं तो क्या लिखूं ...?

राम,श्याम, गौतम, नानक,
औ ईसा,कबीर,कुरान लिखूं |
जाति-धर्म-भाषा औ क्षेत्र में,
बटता हिंदुस्तान लिखूं ||

कलुषित हैवानों की संकीर्णता से,
धरती लहूलुहान लिखूं, या|
सत्य,अहिंसा और प्रेम का,
मरता वह इन्सान लिखूं ||

भ्रष्ट, नपुंसक,कुर्सी के दल्लालों का,
झूठा यशगान लिखूं, या|
कायरता, लोलुपता औ अन्धानुकरण से,
भारतीयता का होता अपमान लिखूं ||

भूखे,चिथड़े में,खुले गगन वालों का,
रोटी कपडा और मकान लिखूं |
या फांसी के फंदे पर झूले,
गरीब, मजदूर,किसान लिखू||

कल्पना लोक की परियों संग खेलूं,
या यथार्थ का गान लिखूं|
झूठ लिखूं या सत्य लिखूं
या फिर झूठा सत्य लिखूं ,
मगर लिखूं तो क्या लिखूं ...?

* बृजेन्द्र उत्कर्ष *

बृजेन्द्र उत्कर्ष
कवि एवं लेखक

206, टाइप-2, आई. आई. टी., कानपुर, भारत
मो॰ 91-9956171230, फो॰ 0512-2598638
E-Mail: kaviutkarsh@gmail.com
Blog: www.kaviutkarsh.blogspot.com

रक्त पिपाषा

****

चहुँ ओर छाईं हैं,
धरा पर मौत की काली घटाएँ,
हर ओर बहती,
अपनों की ही रक़्त धाराएँ,
कलुषित ह्रदय की,
स्वार्थ संग संक्रीर्ण इच्छाएँ,
ताकत के मद में,
मानवों पर राज करने की पिपाषाएँ,
इस हेतु, अगणित नारियों के,
सुहाग हैं उजड गए,
कितनें ही घरों के,
चिराग तक तो बुझ गए,
फिर भी नहीं है शान्त ज्वाला,
उन ह्रदय पाषाण की,
शायद्, अभी भी ह्रदय उनके,
रक्त प्यासे रह गए//

कैद

****

पिंजरे में कैद, उदास सी एक चिड़िया,
न रोती, न हंसती, न चूँ-चूँ चहकती,
ख़ामोशी की चादर, में तनहा दुबकती,
बहुत फडफडाती, बहुत तडफडाती,
हालातों की जकडन, नहीं तोड़ पाती,
न जाने उसे, कुछ हो सा गया है ,
शायद उसका, कुछ खो सा गया है,
कोई कटाक्ष, शूल सा बिध गया है,
अरमानों का दीपक, बुझ सा गया है,
शायद उसे 'कैद' होने का गम है,
अक्ष, नीड़-मंजिल से निज दूर होने पे नम है||

निर्दयी नेतृत्व

****

जबसे हम आजाद हुए, क्या खोया और क्या पाया है |
किसान खेत में भूखा है, मजदूर बहुत अकुलाया है ||

मंहगी हुई दाल और रोटी, दूध के क्या है कहने,
सूखा मां का आंचल भी अब, बच्चे लगे बिलखने,
क्या शासन सत्ता वालों ने, दर्द जान ये पाया है,
जबसे हम आजाद हुए..... ||

कैसे ब्याह होय बेटी का, बेटे को कैसे काम मिले,
रीति-रिवाजों की चिन्ता में, गरीब बाप हर समय जले,
सामाजिक ठेकेदारों ने , दर्द समझ कब पाया है,
जबसे हम आजाद हुए..... ||

लूट-लूट सब भरे तिजोरी, क्या नेता क्या अधिकारी,
अय्याशी में लुटा रहे हैं, धन सारा ये सरकारी,
खून चूसता जनता का, जो गद्दी पर लद पाया है ,
जबसे हम आजाद हुए..... ||

जाति-धर्म,भाषा औ क्षेत्र का, बटवारा करवाते है,
लूटपाट, दंगाफसाद और मारकाट करवाते है,
वोटो के चक्कर में अफजल, को दामाद बनाया है,
जबसे हम आजाद हुए..... ||

बृजेन्द्र उत्कर्ष

बृजेन्द्र उत्कर्ष
कवि एवं लेखक

206, टाइप-2, आई. आई. टी., कानपुर, भारत
मो. 91-9956171230, फो. 0512-2598638
E-Mail: kaviutkarsh@gmail.com
Blog: www.kaviutkarsh.blogspot.com

प्रेम

****

दिल किसी का न टूटे दुआ कीजीये,
बनके राधा के मोहन रहा कीजीये /
प्रेम की बासुरी गर बजाये कोई,
प्रेमधुन में उसी के रमा कीजीये //

प्रेम अनमोल है इसकी कीमत नहीं,
धर्म और धन में इसको तो मत तोलिये /
जिन्दगी चार दिन की जियो प्रेम से,
नफरतो का जहर तो है मत घोलिये //

प्रेम तो है इबादत उस ईश की,
प्रेम रस में हमेशा गमन कीजीये /
तुमको मिल जाये कोई दिवाना कभी,
उसकी दीवानगी को नमन कीजीये //

इस धरा पर है चहु ओर संकट बहुत,
प्रेम के हर सुमन से चमन कीजीये /
मिलन हो जाये सबका जरुरी नही,
दूर ही दूर से प्रेम है कीजीये //

पहली नजर का पहला प्यार

****

कोयल कूके डाली-डाली, मधुवन में गुंजार हुआ |
मन के कोरे कागज पर फिर, एक नया श्रृंगार हुआ |
नजरों से जब नजर मिली तो, दिल गुल से गुलजार हुआ |
जबसे हमको पहली नजर का, पहला-पहला प्यार हुआ ||

दीवानों सा स्वप्न संजोएँ, खोया-खोया रहता हूँ |
एक उनकी चाहत में हरदम, भोया-भोया रहता हूँ |
देख चाँद मेरा-मुझको तो, एक नया खुमार हुआ |
जबसे हमको पहली नजर का, पहला-पहला प्यार हुआ ||

दीवानों सा स्वप्न संजोएँ, खोया-खोया रहता हूँ |
एक उनकी चाहत में हरदम, भोया-भोया रहता हूँ |
देख चाँद मेरा मुझको तो, एक नया खुमार हुआ |
जबसे हमको पहली नजर का, पहला-पहला प्यार हुआ ||

पास मेरे जब रहते है वो, दिल खिल-खिल सा जाता है |
साँझ तले कुमुदनी में कोई, भौंरा मिल सा जाता है |
मिलन और बिछुड़न में दिवाना, ये दिल बेक़रार हुआ |
जबसे हमको पहली नजर का, पहला-पहला प्यार हुआ ||

प्रीत की बतियाँ

****

मेरे मन के ठहरे जल में, कंकड़िया न मार,
तड़फ देख लहरों कि कहीं हमें, हो जाये न प्यार ||

मेरे मन मंदिर में क्यों तू, मीरा बनकर गाए,
सुबह-दुपहरी-रात सभी पल, क्यों तू मुझे सताए,
ओ री बावली प्रेम दिवानी, मत कर आंखे चार,
तड़फ देख असुंवों कि कहीं हमें, हो जाये न प्यार ||

मेरे मन मधुवन मे क्यो तू, इधर उधर मडराए,
पपिहा बिन स्वाती बूंदों के, प्यासा ही रह जाए,
नदिया सागर से मिलने को, क्यों इतनी बेक़रार,
तड़फ देख लहरों कि कहीं हमें, हो जाये न प्यार ||

मेरे मन की कुञ्ज गलिन में, क्यों तू रास रचाए,
जैसे राधा-कान्हा को, रह-रह कर नांच नचाये,
ले-ले न आगोश में मुझको, कर न दे इजहार,
प्रीत की बतियाँ सुन कहीं हमको, हो जाये न प्यार||

* बृजेन्द्र उत्कर्ष *

बृजेन्द्र उत्कर्ष
कवि एवं लेखक

206, टाइप-2, आई. आई. टी., कानपुर, भारत
मो॰ 91-9956171230, फो॰ 0512-2598638
E-Mail: kaviutkarsh@gmail.com
Blog: www.kaviutkarsh.blogspot.com

प्रेम बंधन

****

हाँ, अगर तुम मेरे साथ,
मेरी बहन को चलते हुए देख,
उसे मेरी प्रेमिका समझ जाते हो,
तो कोई बात नहीं,
रिश्तों की डोर में उलझ जाते हो,
तो कोई बात नहीं,
बहन प्रेम का धागा बांध,
प्रेम बंधन में बंधती है,
और प्रेमिका, प्रेम को ही बंधन मान,
प्रेम बंधन में बंधी रहती है
प्रेमिका में ही जब,
माँ, बहन और बेटी,
के गुण होते है,
तभी वो अच्छी पत्नी बनती है,
और अगर ये गुण नहीं है तो,
वो पत्नी तो आपकी रहेगी,
पर, प्रेमिका किसी और की होगी,
या प्रेमिका तो आपकी रहेगी,
पर, पत्नी किसी और की होगी ||

प्रदूषण का दानव

****

प्रदूषण का दानव, यदि बढता ही रहेगा /
मरघट के सिवा धरती पर, कुछ न बचेगा //
न रहेगी स्वच्छ वायु, न रहेगा स्वच्छ जल,
चहुं ओर मौत का तांडव, छाया ही रहेगा //

प्रकृति की सुन्दरता, कुरूप हो जायेगी
धरती सुहागन से, विधवा हो जायेगी
पूस में भी होगा तब, ज्येष्ठ का महीना,
सावन में भी धरती, की प्यास न बुझेगी

धरती मां की गोद पर, लाशाँ के ढेर पर,
मा की ममता का मातृत्व, भी सूखा ही रहेगा,
सूनी होगी आखें, सूखेगा तब ह्रदय भी,
इन्सान ही इन्सान से तब, हैवान बनेगा //

धरती होगी बंजर सूखी और जंजर
मा के आचल का दूध भी जहर बनेगा
धरती मां की कोख से न उपजेगा अन्न,
इन्सान ही इन्सान का तब निवाला बनेगा //

अभी भी वक्त है, सम्हलो और जागो,
धरती मां का कर्ज, कुछ तो चुका दो,
मां को विधवा से, सुहागन बना दो,
कण-कण में इसके, हरियाली फैला दो//

* बृजेन्द्र उत्कर्ष *